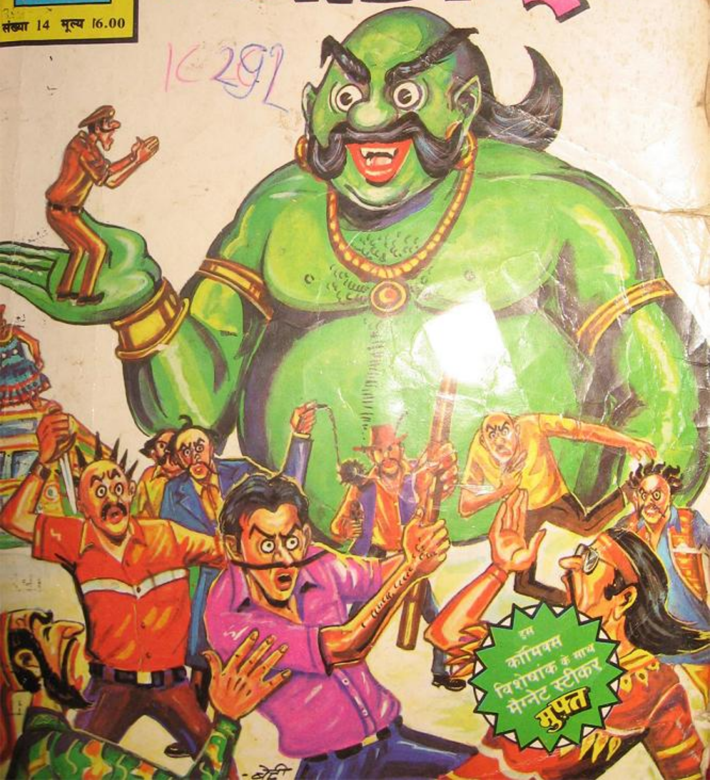
मनोज
कॉमिक्स
विशेषांक

संख्या 14 मूल्य 16.00

# हवलदार बहादुर और नौ अजूबे



# हवलदार बहादुर और नौ अजूबे


चित्रांकन
बेदी
कहानी
विनय प्रभाकर



















तभी एक ने किया एक बेवकूफाना सवाल–
क... क्या चाहते हो तुम?
लो करलो बात, अमा मियां ये भी पूछने की बात है, हमें तुम सबके रुपये और गहने चाहिए।


और मुझे तुम सबके बाल। हे... हे... हे...!
हाय रे, मैं मर गई! यह मुआ क्या हम औरतों को भी टकली कर जाएगा।


चलो साथियो, हो जाओ शुरू।


जैसे ही नौ अजूबे आगे बढ़े, कुछ दिलेर युवक भी आगे बढ़े।
ठहरो! हमारे होते हुए तुम इन लोगों को नहीं लूट सकते। हम तुम्हें ऐसा नहीं करने देंगे।
हां, हम ऐसा नहीं होने देंगे।


भइये नचकइया व हाड़तोड़, सुना क्या कह रिये हैं भाई लोग?
सुने तो लागे है इन लोगां की हड्डियां खुराक मांगे हैं।


तो ठीक है ब्रदर, देर किस बात की है। हो जाओ शुरू।

अगले पल सभी सक्रिय हो उठे।
आऽऽऽ!
हाड़तोड़ का एक वार ही थारी टांग का क्रियाकर्म कर देगो!
खटाक
कड़ाक

माकडू की सांसों की बदबू को सहन नहीं कर सकते तुम!
ओह!
हे भगवान! दम घुट गया मेरा तो।

अरे, यह तीनों तो बड़ी जल्दी बेहोश हो गये।

पेंटल के ओवरकोट में हथियारों का खजाना है।

जैसे ये!
फटाक
ओह!
खटाक
ई... ई... ई...

और जैसे ये!
खट
खट
आह!
आह!

उधर हबीब टकला अपने मनपसंद काम में जुटा हुआ था।
अब तुम सबको टकला करेगा हबीब टकला!
!!!
???
खट


अब तो पल भर बिजली की सी तेजी से चलने लगे हबीब टकले के हाथ...
...और लोग होने लगे गंजे।


आजा मोटे, अब तेरी बारी है।
मुझ पर अपना उस्तरा चलाने की जरूरत नहीं है भाई।


मैं अपने बाल वैसे ही तुम्हें दे देता हूं।
!!!


इधर नचकइया अपने ही स्टाइल में लोगों की खाट खड़ी किए था।
!!!
!!!
ब्रेक...ब्रेक... ब्रेक...ब्रेक डांस मैं तो करूंगा।
मैं भी तुम लोगों की हड्डियों को ब्रेक करूंगा।


आई एम ए ब्रेक डांसर!
एण्ड आई एम ए म्युजिकल फाइटर।


तभी स्टीरियो में अगला गाना शुरू हो गया और इसी के साथ नचकइया के नाचने का स्टाइल भी।
ताथई... ताथई...
ता थई... तक..थक
तड़ाक
तड़ाक


इधर झाड़िया के हथियार ने लोगों की ऐसी-तैसी कर रखी थी-
मेरा यह खुजली वाला पाउडर तुम्हें चार दिनों तक चैन नहीं लेने देगा।


अरे, कोई बचाओ रे! मेरे बदन में खुजली लग रही है।
आई... ई... ई... मर गया।
ई... ई... ई...!


उधर रपटुआ के शिकारों को अपनी नानी याद आ रही थी।
ही... ही... ही...! रपटो, और रपटो! यह रपटुआ का वार है। कभी खाली नहीं जाता।


शीघ्र ही वहां मौजूद लोग बेहोश हो चुके थे।
नचकइया, हाड़तोड़ू, तुम इन लोगों की जेबें खाली करो...
और तालातोड़ू, तुम इस घर की तिजोरी तोड़कर उसमें झाड़ू फेरो...


...और मैं इन लोगों के सिरों पर उस्तरा फेरता हूं।


दूसरी ओर पास के पुलिस स्टेशन में-
क्या कहा? नौ अजूबे?


जी हां इंस्पेक्टर साहब! आप जल्दी आइये।
!!!

हवलदार बहादुर, जल्दी से जीप तैयार करो। नौ अजूबों को गिरफ्तार करने चलना है हमें।

न... नौ अजूबे!



पागलों की तरहं आंखें मत मटका बेवकूफ, जो मैं कहता हूं जल्दी कर।

यस... यस सर!










लेकिन बाहर पहुंचते ही उछल पड़े।
जाते-जाते हमसे तो मिलते जाओ नौ अजूबो!
आंय! पुलिस!


फिक्र की कोई बात नहीं। हमें पुलिस से भी निपटना आता है।


इसी के साथ-
पेंटल के हथियारों के सामने ये हथियार कुछ भी नहीं हैं।
धड़ाक
आह!


अब देखना रपटूआ का कमाल।


रपटूआ के हाथ से निकलता वह तरल पदार्थ सड़क पर फैलता चला गया, जिस पर रपटकर रपटूआ राकेट की गति से पुलिसकर्मियों से टकराया और उनका बैण्ड बजा दिया-
हाय!
भड़ाक
धड़ाक


प्लेग की तरह फैलेगा मेरा यह हथियार।
हाय! कोई मुझे इस खुजली से बचाओ।


माकडू की सांसों की बदबू कोई सहन नहीं कर पाएगा।
आई...ई...ई...

हवलदार बहादुर का भी बुरा हाल होने वाला था, क्योंकि उसके सामने खड़ा था नचकइया।











अचानक नचकइया का शरीर हवा में उछला और-




अभी हवलदार बहादुर सम्भल कर खड़े भी न हो पाये थे कि-

आंय! ये तो फिर आ गया।







कुछ ही पलों में नौ अजूबों ने पुलिस वालों को ढेर कर दिया था।
हो गया सभी का बंटाधार!
अब निकल चलो यहां से।


अभी कैसे! अभी तो इन सबको गंजा करना है मुझे! बहुत दिन हो गए पुलिस वालों के सिर मुंडे।


अगले पल हबीब टकला अपने मन-पसंद काम में जुट गया।
हाय! छोड़ दे जालिम! वरना मैं किसी को मुंह दिखाने लायक नहीं रहूंगा।


अपना काम कर नौ अजूबे अपनी गाड़ी, जो खुद भी एक अजूबा थी, में बैठकर वहां से रवाना हो गए।


हाय! अब मैं क्या मुंह लेकर घर जाऊंगा।
क्या पता था, एक दिन खुजली वाला कुत्ता बनना पड़ेगा।


फिर जो अजूबों के हाथ से लुटी-पिटी पुलिस वाली वापस चल पड़ी।
हूं...हू...हू...! कम्बख्तों ने गंजा कर डाला सभी को।


अभी वह कुछ ही दूर चले थे कि-
रोको... रोको...!


साहब! हवलदार बहादुर जीप रोकने का इशारा कर रहा है।
बिठा लो, कल थाने में खबर लूंगा इसकी।


हवलदार को जीप में बिठा लिया गया।
ही... ही... ही...!
!!!


उसकी हंसी जब खड़कसिंह से सहन नहीं हुई।
क्यों बे? तू दांत क्यों फाड़े जा रहा है। कहीं दौरा-वौरा तो नहीं पड़ गया तुझे?
वो बात नहीं है सर।


दरअसल, मैं तो आपकी गंजी टांट देखकर हंस रहा हूं...


...डंडे की कसम! पूर्णमासी के चांद से भी ज्यादा चमक रही है।

इतना सुनते ही इंस्पेक्टर खड़गसिंह का पारा सातवें आसमान पर जा पहुंचा।










तुरन्त ही ड्राइवर ने गाड़ी रोक दी।










लेकिन हवलदार बहादुर को जबरदस्ती जीप से उतार दिया गया।
खड्गसिंह के बच्चे, कभी मौका मिला तो तुमसे ऐसा बदला लूंगा कि तू मरने के बाद भी मुझे याद कर-करके रोयेगा।
जूSSS


मन ही मन खड्गसिंह को कोसते हुए हवलदार बहादुर पैदल ही घर की तरफ चल दिए।
भगवान् करे कीड़े पड़ें खड्गसिंह को। कम्बख्त को सस्पैंड करने के लिए यही जंगल मिला था।


कुछ दूर चलने के बाद झाड़ियों में से उभरती एक आवाज को सुनकर हवलदार बहादुर उछल पड़े।
ओय! यह आवाज कैसी?
ठक ठक


लेकिन अगले ही पल वह सम्भले और-
लगता है, झाड़ियों में कोई है, अभी देखता हूं।
ठक ठक...
...ठक...

जरूर कोई चोर होगा।
ठक..ठक

झाड़ियों के दूसरी ओर एक तांत्रिक-नुमा व्यक्ति जमीन में एक गड्ढा खोद रहा था।
ओह!
ठक...ठक

क...कौन है?

अबे, मैं पुलिस हवलदार हूं। क्या खोद रिया है यहां?
प... पुलिस!

अगले पल-
ओह, रुक जा।
पीं...टीं
टीं

हवालात में बंद करके सड़ा दूंगा साले!

अचानक हवलदार बहादुर को ठोकर लगी और-
धाड़
ठाक
हाय! मर गया!


फिर हवलदार बहादुर वापस लौट पड़े।
भाग गया साला! पता नहीं गड्ढा क्यों खोद रहा था?


कुछ देर बाद वह उसी स्थान पर पहुंचे, जहां वह व्यक्ति गड्ढा खोद रहा था।
आंय! यह बोतल कैसी है?


ओह! इसमें तो धुआं भरा है।


ढक्कन खुलते ही हवलदार बहादुर को जोर का झटका लगा।
शूं sss
ओए!


हे राम जी, यह क्या मुसीबत है?


हा... हा... हा.. हा... हा... हा...
डूडू... डू..


जैसे ही धुआं छंटा, हवलदार की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई।
हा...हा... हा...!
डू... डू... डू... यह तो भूत है!

अगले पल–

गर्दन मरोड़ दूंगा ।

ऊई... ई...

लेकिन दूसरे ही क्षण जिन्न चौंक उठा।

ओंय ! तुम तो वह आदमी नहीं हो, जिसने मुझे बोतल में बंद किया था ।

ब... ब... बिल्कुल नहीं हूं जी ! म... मुझे छोड़ दो ।

लो छोड़ दिया ।

क्या बोला ?

आपको नहीं बोला जी ! छोड़ दो मुझे ।

छोड़ दूंगा। तुमने मुझे आजाद कराया है, पहले उसका शुक्रिया तो अदा कर दूं।

ओए, मैं गिर जाऊंगा।

ओय, इस तरह छोड़ने के लिये नहीं कह दिया था ।

धड़ाम

हाय, मार डाला। हवालात में सड़ा दूंगा साले ।


चिन्ता मत करो, मैं तुम्हें गिरने नहीं दूंगा। बोलो, क्या इनाम लोगे?
हूँ... इनाम की छोड़ भइये और पहले ये बता तू है कौन?

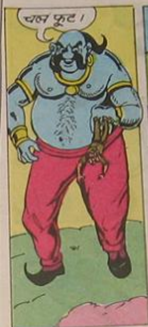
मैं अलादीन के चिराग वाले जिन्न का मौसेरा भाई हूं। इस देश में घूमने आया था, मगर यहां के जादूगर ने मुझे पकड़कर बोतल में बंद कर दिया था। तुमने मुझे आजादी दिलाई है, इसलिए मैं तुम्हें कुछ इनाम देना चाहता हूं।


ही... ही... ही...!
ओह! यह बात है। फिर तो मैं इस जिन्न को अपना गुलाम बना सकता हूं। चिराग का जिन्न भी तो अलादीन का गुलाम था।


ऐ, तुम घोड़े की तरह हिनहिना क्यों रहे हो?
ओय् तमीज से बात कर। अब मैं तेरा आका हूं और तू मेरा गुलाम।


गर्दन मरोड़कर पेड़ पर टांग दूंगा साले आदमी के बच्चे।
क... क्या करते हो? छोड़ो!


एक बात कान खोल कर सुन ले। मैं अपने मौसेरे भाई की तरह चिड़ी का अट्ठा नहीं, जो किसी आदमी का गुलाम बन जाऊंगा।
त... तो मत बनो। मुझे जाने दो।


चल फूट।


चाँड़
आह! मार डाला रे।


माना ले बेटा हवलदार! वरना आज तेरी चम्पाकली विधवा हो जाएगी।
इसने मुझे आजाद किया है। इसे कुछ इनाम तो मिलना ही चाहिए।


अगले पल–
शूँSSS


ओह!


आई... ई... ई...!


कुछ क्षण बाद जैसे ही जिन्न ने अपना मुंह बंद किया।
हाय! मर गया चम्पाकली!
धड़ाम


इस बार हवलदार का पारा हाई हो गया था।
अबे ओ जिन्न के बच्चे! तुझे जो करना है, एक बार कर ले। बार-बार क्यों पटक रहा है? आह!


हा... हा... हा... ! नागराज ने हो बेवकूफ आदमी। मैंने फूंक मारकर तेरे बदन में अपनी एक शक्ति पहुंचा दी है। अगर तुझमें थोड़ी सी अक्ल होगी तो कुछ दिन उस शक्ति का फायदा उठा लेगा।


ओए, क्या कह दिया है तू? क्या पहुंचा दिया है तूने मेरे बदन में?
यह तो तुझे खुद ही ढूंढ़ना होगा।


इतना कह कर जिन्न वहां से गायब हो गया।
अबे ओए, सुन तो।
शूंऽऽ
चला गया।


पता नहीं साला क्या घुसा गया है मेरे अन्दर! अब कैसे पता करूं मैं?


यही सोचते हुए वह अपने घर तक पहुंच गये।
चम्पाकली तो गुण्डू के साथ गांव गई है। अब मैं जिन्न वाली घटना किसे बताऊंगा?


तभी—
ओए!
धाड़


हवालात में सड़ा दूंगा साले। कानून को टक्कर मारकर गिराता है।
आह!


मैंने आपको जानबूझकर टक्कर नहीं मारी मालिको! उसने मुझे डंडा मारकर बाहर फेंका था।


क्यों बे, तूने इसे डंडा क्यों मारा?
तमीज से बात करो हवलदार! यह आदमी मेरे घर में बिना आज्ञा के घुसा था।


गुर्र... गुर्र...!


तुम्हारा घर? मगर यह घर तो कई महीनों से खाली पड़ा था?
मैंने आज ही इसे किराये पर लिया है। मेरा नाम धुरंधरसिंह है। मैं फौज का रिटायर्ड कर्नल हूं।


रिटायर्ड कर्नल! ही... ही... ही...! फिर तो मिलाइए हाथ। मैं आपका पड़ोसी हवलदार बहादुर सिंह हूं। बड़ी खुशी हुई आपसे मिलकर।
ओ शटअप! मैं पड़ोसियों को मुंह लगाना पसंद नहीं करता।


और-
ऊई... यह साला तो पागल लगता है।
धड़ाक
ही... ही... ही...!


चुप बे। हवालात में सड़ा दूंगा। क्यों घुसा था कर्नल के घर में।
न... नौकरी मांगने गया था जी।
उत्तर देकर वह आदमी तुरन्त ही वहां से खिसक लिया।


कुछ देर बाद हवलदार बहादुर अपने घर में आईने के सामने खड़े थे।
अब देखता हूं उस जिन्न के बच्चे ने क्या घुसाया है मेरे बदन में?


तभी बिजली गुल हो गई।
फक्क
ओह! लाइट चली गई।


मोमबत्ती ढूंढ़ता हूं।


गलती से वह मोमबत्ती ढूंढ़ते-ढूंढ़ते दीवार के निकट पहुंच गए...


...इस बात से अनजान कि उन्होंने जिन्न द्वारा दिये गये इनाम के रूप में दीवारों के पार निकल जाने की क्षमता पा ली थी।


और इस तरह अनजाने में वह कर्नल धुरंधरसिंह के घर में पहुंच गए।


हवलदार बहादुर खुद भी हैरान थे।
ओह! मेरा कमरा कितना बड़ा हो गया है। दीवार या दरवाजा ही नहीं मिल रहा है।


तभी हवलदार किसी चीज से टकराये और—
धाड़
उफ!


उई... ई... ई...!


क... कौन है?
बचाओऽऽऽ!


चीख सुनकर कर्नल धुरंधर-सिंह बन्दूक लिये अन्दर दाखिल हुआ।
कौन है बे? किसकी हिम्मत हुई कर्नल धुरंधर सिंह की बीवी के बेडरूम में घुसने की।
कर्नल सिंह! अरे बाप रे! यह क्या चक्कर है?


तभी लाइट आ गई।
पिट
आंय! यह मैं कहां आ गया?
आंय! हवलदार!
स्वामी...


आ... यह आदमी मेरे कमरे में कैसे घुस आया स्वामी?
अभी पूछता हूं साले से!


कर्नल की भयंकर मुद्रा देख घबरा उठे हवलदार।
म... मुझे कुछ नहीं पता जी, मैं तो अपने कमरे में था।


गोली अन्दर करूंगा तो सब पता...
चल जाएगा। तू वही हवलदार है ना?


हां! लेकिन तुम मुझे गोली नहीं मार सकते।
अबे, अपनी पत्नी के बेडरूम में घुसने के आरोप में मैं तुझे तोप से भी उड़ा सकता हूं।


और अगले पल-
उई... ई... ई...!
ठाक


फिर-
ठक
हाय मर गया रे!
हाय!
ठक
धुंम
हाय!


आह! छोड़ दे कर्नल के बच्चे!
छोड़ दूं! अबे, अभी तो मैं तुझे थाने लेकर जाऊंगा और तेरी वर्दी उतरवा दूंगा।


अजी मैं कहती हूं, छोड़ दो इसे। ज्यादा शोर करोगे तो मेरी ही बदनामी होगी। सब कहेंगे, यह कर्नल की पत्नी के बेडरूम में घुसा था।
बहन जी ठीक कह रही हैं कर्नल! छोड़ दे मुझे।


तो फिर भाग जा।
ठाक
ओह!


भाग ले बेटा हवलदार! कहीं उस कर्नल को फिर दौरा पड़ गया तो तू तो गया काम से।


अपने घर के दरवाजे पर पहुंचकर ही उन्होंने अपनी स्पीड को ब्रेक लगाई थी।
ओह! दरवाजा तो भीतर से बंद होगा। चिटकनी तो मैंने ही लगाई थी।
चींऽऽऽ


मगर मैं उस कर्नल के घर में कैसे पहुंच गया? खैर, बाद में सोचूंगा। पहले अपने घर में घुसने का जुगाड़ करूं!


वह फौरन मकान के पिछली तरफ पहुंचे।
पाइप द्वारा छत पर चढ़ जाता हूं!


अगले क्षण-


तभी गली में प्रविष्ट होते दो व्यक्ति चौंके।
आंय...! यह अपने हवलदार जी के घर में कौन घुस रहा है?
कोई चोर है शायद!


अगले पल-
अभी बताता हूं साले को!


पत्थर पूरी गति से आकर हवलदार से टकराया और उनके हाथ पाइप से छूट गये।
ठाक




आई... ई...ई...!


परिणाम स्वरूप वही हुआ जो होना चाहिए था, यानी हवलदार की एक बार फिर से 'ध' से धड़ाम हो गई।
पकड़ लो!
हाय रे!
धड़ाम


अगले पल दोनों व्यक्ति हवलदार पर पिल पड़े।
धड़ाक
ओय, छोड़ दो मुझे! हवालात में सड़ा दूंगा वरना।
ठाक


हवलदार की आवाज पहचान कर दोनों के होश उड़ गये।
पत्थर किसने मारा था? गुर्र... गुर्र...!
उई... ई...! यह तो हवलदार जी हैं!
बाप रे!


जवाब देने के स्थान पर दोनों वहां से भाग खड़े हुए।
भागो! भागो!
गुर्र... गुर्र...!


रोते-कलपते व दर्द से कराहते हवलदार बहादुर उठ खड़े हुए।
आह! बहुत चोट लगी है, अब तो पाइप पर भी नहीं चढ़ सकता।


दर्द से कराहते हुए वह पुन: घर के दरवाजे के सामने पहुंच गये।
अब तो दरवाजा तोड़कर ही भीतर घुसना होगा।


अगले पल—
एक... दो... तीन...!


हूँ...श्श्sss


लेकिन अगले पल जो हुआ, उससे वे बुरी तरह बौखला उठे।
अरे...रे...रे...
शूं ऽऽऽ


हाय रे! मर गया रे।
धड़ाम


ये क्या चमत्कार है? दरवाजा तो टूटा नहीं और मैं अन्दर आ गया।
आश्चर्य में डूबे हवलदार बहादुर इस से निकले...


...फिर लड़खड़ाते हुए दरवाजे तक पहुंचे और –
हे राम!


ओह! मैं बंद दरवाजे के पार निकल सकता हूं... हुर्रे...!


और घुस भी सकता हूं।


पूरी बात समझ में आते ही हवलदार बहादुर खुशी के मारे भांगड़ा करने लगे।
ही...ही...ही...! हा...हा...हा...! समझ गया, उस जिन्न ने मुझे यही ताकत इनाम में दी है। हुर्रे! होय... होय...!


खुशी के मारे वह पूरी रात बिस्तर पर ही उछलते रहे
अब तो मैं कहीं भी जा सकता हूं। बड़े-बड़े चोरों को उनके घर में घुसकर पकड़ सकता हूं। ही...ही... ही...!

अगले दिन पुलिस हैड क्वार्टर पर हंगामा मचा हुआ था।

राजनगर पुलिस!

नौ अजूबों को पकड़ो या इस्तीफा दो।

अगर नौ अजूबे जल्दी न पकड़े गये तो यह शहर गंजों का शहर बन जायेगा।

शहर के आतंक नौ अजूबों को गिरफ्तार करो।

हाय! हाय!

नौ अजूबों के शिकार शहरी हैडक्वार्टर के बाहर धरना दिए हुए थे।

कमिश्नर साहब के ऑफिस में—

नौ अजूबे... नौ अजूबे... परेशान हो गया मैं सुनते-सुनते! आखिर कौन हैं यह नौ अजूबे?

सर, अब तक हमने जो खोजबीन की है, उससे पता चला है कि...

...नौ अजूबों के इस गिरोह का सरदार हबीब टकला है...

...वह उस्तराधारी है और जहां भी चोरी करता है, सबको गंजा कर देता है...


...और उसके सदस्य हैं...ताला तोड़, जो दुनिया के किसी भी ताले को चुटकियों में तोड़ डालता है।
खटाक


...रपटुआ, जिसके फिसलने वाले तरल पदार्थ पर फिसलकर लोग अपनी हड्डियां तुड़वा लेते हैं...


...नचकइया, भारत के सभी डांसों में निपुण व गजब का मार्शल आर्ट फाइटर...


हाड़तोड़, इसका वार जहां पड़े, वहां की हड्डी टूट जाये...
चटाख


...भभकू, जबरदस्त कार ड्राइवर। सांसों की बदबू से किसी को भी बेहोश कर सकता है...


...पेंसिल, जिसके ओवरकोट में पिन से हैंडग्रेनेड जैसे खतरनाक हथियार छुपे हैं...


...चिपकू, पाइप व दीवारों पर चढ़ने में चैंपियन...


...झाड़िया, जिसका मुख्य हथियार है खुजली वाला पाउडर, जिस पर भी पड़ जाये, वह चार दिन तक खुजला-खुजला कर अधमरा हो जाता है।


ओह! यानी हमारे पास ऐसा कोई तरीका नहीं है, जिससे हम उन्हें पकड़ सकें।
सर, एक तरीका है। हम उन्हें एन्काउंटर में शूट करवा सकते हैं।


ओ शटअप! हमारा काम मुजरिमों को गिरफ्तार करना है, उन्हें मारना नहीं।


हमें उनसे निपटने के लिए और कुछ सोचना होगा।
सर, एक आदमी है जो उन अजूबों को रोक सकता है।


कौन?
हवलदार बहादुर सर!


गुड आइडिया! खड़गसिंह, तुम फौरन जाओ और उसे नौ अजूबों वाले केस पर लगा दो।
बट सर, उसे तो मैंने पन्द्रह दिन के लिए सस्पैंड किया हुआ है।


व्हाट? वो किस लिए!
जवाब में खड़गसिंह ने कमिश्नर साहब को उस घटना के विषय में बता दिया।


पूरी बात सुनकर -
मैं नहीं मानता कि हवलदार उन नौ अजूबों से डरकर वहां से भागा होगा। वह तो बहुत बहादुर आदमी है। उसके भागने की अवश्य ही कोई दूसरी वजह होगी।


खैर, जो भी हो, तुम फौरन थाने जाओ और हवलदार बहादुर के सस्पेंशन ऑर्डर वापस लेकर उसे इस केस पर लगा दो।
यस सर!

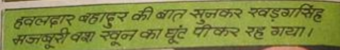

कुछ देर बाद थाने में —
रामसिंह, तुम फौरन हवलदार के घर चले जाओ। उससे कहना, मैंने उसे फौरन ड्यूटी पर बुलाया है।
यस सर!


सिपाही के जाने के बाद—
क्या किस्मत पाई है हवलदार बहादुर ने। कमबख्त, हर मुश्किल से मुश्किल केस चुटकियों में हल कर लेता है। और इसी वजह से कमिश्नर साहब की आंखों का तारा बना हुआ है वह।


कुछ देर बाद—
मे आई कम इन सर! ही...ही...ही...!
आओ हवलदार, आओ!


ही...ही...ही...! आपने हमें बुलाया सर!
हां! लेकिन तुम यह हंस क्यों रहे हो?


वो सर, क्या है कि आपकी गंजी खोपड़ी देखकर हंसी छूट जाती है। कसम चम्पाकली की, आप बिल्कुल अमरीशपुरी की तरह लगते हैं गंजे होकर!
ओ यू...!


हवलदार बहादुर की बात सुनकर खड़गसिंह मजबूरी वश खून का घूंट पीकर रह गया।


ठीक है बच्चू, उड़ा ले हंसी। लेकिन आज मैं भी तेरा ऐसा हाल करूंगा कि तू याद करेगा।


तभी—
सर, आपने बताया नहीं हमें क्यों याद किया है?
हवलदार, कमिश्नर साहब ने तुम्हें नौ अजूबों वाले केस पर नियुक्त किया है।


न...नौ अजूबे!
हां! तुम्हें आज ही इस केस पर लगाना है। पर जाने से पहले तुम मेरा एक काम करते जाओ।


वह क्या सर?
आओ मेरे साथ, बताता हूं!


हां...हां...! क्यों नहीं सर, अभी करता हूं।
बेटा हवलदार, स्टोर रूम साफ करते-करते तुझे नानी याद आ जायेगी।


हवलदार को लेकर खड़गसिंह थाने के स्टोर रूम में पहुंचा।
प्यारे हवलदार, बहुत दिनों से स्टोर की सफाई नहीं हुई। अगर आज तुम कर दो तो...
इस साले का हुक्म मानना ही होगा, वरना ये फिर सस्पेंड कर देगा।


फिर वाकई स्टोर साफ करते-करते हवलदार बहादुर की बुरी हालत हो गई।
हे भगवान्! इस कबाड़खाने को साफ करते-करते तो मैं अधमरा हो जाऊंगा।


खड़गसिंह ने मुझसे अपना मजाक उड़ाने का बदला लिया है, मैं भी उसे छोड़ूंगा नहीं।


अचानक उन्हें एक खुराफात सूझी।
खड़गसिंह दीवार के दूसरी तरफ बैठा है। अभी बताता हूं साले को। ही... ही... ही...!


और हवलदार बहादुर कमरे की एक दीवार के निकट पहुंच उसमें सिर घुसाने की कोशिश करने लगा।


अगले पल-
ही... ही...ही...!


तभी खड्गसिंह को किसी कागज की जरूरत महसूस हुई और-
ओह! कहां गया वह पेपर, यहीं तो रखा था मैंने।
ही... ही... ही...!
आइडिया!


अगले पल-


हवलदार बहादुर ने धीरे से खड्गसिंह की कुर्सी पीछे खिसका दी...
ही... ही...ही...!
और दीवार में वापस घुस गया।


मिल गया!


और फिर खड्गसिंह ने जैसे ही अपनी कुर्सी पर बैठना चाहा -
हाय!
धड़ाम


धड़ाम
हा...हा...हा...
हो गई धस

अगले पल हवलदार बहादुर मजा लेने के लिये खड्गसिंह के कमरे में आ पहुंचे।

आह... उफ!

क्या हुआ सर? अभी-अभी यहां धड़ाम की आवाज हुई थी।

क... कुछ नहीं हुआ। तुम जाकर अपना काम करो।

मगर सर, मैंने धमाका सुना था। कहीं आप सोते में कुर्सी से लुढ़क तो नहीं गए थे?

शटअप! एण्ड गेट आऊट!

ही... ही... ही...! तेरे इस तरह फुदकने की वजह मैं जानता हूं। हा... हा... हा...!

कुछ देर बाद-

फिर मजा आएगा। ही... ही... ही...!

तड़ाक

ओय!

क... कौन है?

यहां तो कोई नहीं है। फिर मारा किसने था?


तभी-
क्या हुआ साहब? ही... ही... ही...!
आंय!


खड़गसिंह घबराकर जैसे ही उठा-
धाड़
उफ!
हा... हा... हा...!


त... त... तुम!


हां, मैं ही हूं। क्या कर लेगा तू?
कहकर हवलदार तुरन्त ही पीछे हट गये।


जबकि खड़गसिंह स्टोररूम में जाने के लिए दरवाजे की ओर दौड़ पड़ा।
गुर्र... गुर्र...! नहीं छोड़ूंगा उसे।


और जैसे ही इंस्पेक्टर खड़गसिंह स्टोररूम में घुसा।
आंय! यह तो यहां काम में जुटा है।
ही... ही... ही...!


फिर खड़गसिंह उस दीवार के पीछे जा पहुंचा, जो उसके कमरे से मिलती थी।
उफ! यहां तो कोई छिद्र भी नहीं है!
अरे साहब, आप वहां दीवार पर क्या ढूंढ रहे हैं?


क... क... कुछ नहीं। तुम अपना काम करो।
वह तो मैं कर ही रहा हूं। हा... हा... हा...!


अपने कमरे में वापस पहुंचकर–
क्या हो रहा है यह? मैंने अपनी आंखों से उसे इस दीवार से झांकते देखा था।


तभी–
हा... हा... हा...!
आंय!


अगले पल
हवलदार बहादुर ने पुनः खुराफात की।
पीं... टीं...
ह्... ह्... ह्...


अगले पल–
तेरी तो...!
अरे बाप रे! हक्कर मारेगा!
उसे वार करते देखकर हवलदार फौरन पीछे हट गए...


...और खड़गसिंह का सिर दीवार से जा टकराया।
भड़ाम
भड़ाम
भड़ाम
भड़ाम

इस प्रकार खड़ूकासिंह को बुरी तरह धकाले के बाद हवलदार बहादुर अपने घर की ओर चल दिए।

घर चलकर आराम किया जाए। अब कल ही उन नौ अजूबों को ढूंढने निकलूंगा।

घर पहुंचते ही वे चौंक उठे।

आंय। मैं तो दरवाजे पर ताला लगाकर गया था, खोल किसने लिया।

देखता हूं, कहीं कोई चोर तो नहीं घुस गया।

अंदर पहुंचकर-

चम्पाकली तुम? तुम तो टुण्ड के साथ गांव गई थी ना?

हां, लेकिन हम रास्ते से ही वापस लौट आये। दरअसल, अपनी बहन की शादी में देने के लिए मैं उपहार ले जाना भूल गई थी।


अब तुम जाकर बैंक से जल्दी से दो हजार रुपये निकाल लाओ, ताकि मैं जौहरी बाजार जाकर कोई अच्छा-सा उपहार खरीद सकूं।


दो हजार का उपहार! दिमाग तो खराब नहीं हो गया है तेरा। तू कोई करोड़पति की औलाद है, जो इतना महंगा उपहार दूंगी।


हवलदार बहादुर के मुंह से इतना सुनते ही चम्पाकली का गुस्सा रौद्र रूप धारण कर गया।
गुर्र... गुर्र... तुमने एक साथ मुझे और मेरे बापू को गाली दी।


छोड़ूंगी नहीं!
खड़ाक
हाय!
म्हारी फूफी भी बड़ी कमाल की मुक्केबाज है।


चम्पाकली का कहर बहुत जोरों से टूट रहा था हवलदार बहादुर पर।
धाड़
हाय मार डाला।
हाय!


धाड़


बस कर चम्पाकली। वरना तुम अपने हाथों ही अपनी मांग का सिंदूर उजाड़ डालोगी।



तो बोलो, बैंक जाओगे?
हां, जाऊंगा! जरूर जाऊंगा!




कुछ पलों बाद हवलदार बहादुर बैंक की तरफ चले जा रहे थे।




इधर कोई और भी बैंक जाने की सोच रहा था।
आज हम स्टेट बैंक ऑफ रूपनगर लूटकर करोड़ों के मालिक बन जायेंगे।
हां, लेकिन जल्दी चलो भाइयो, मेरा उस्तरा टांटें गंजी करने को तरस रिया है।




उधर स्टेट बैंक ऑफ रूपनगर में।
अरे... अरे...! बिना लाइन कहां घुसे जा रहे हो?
चुप ओए, मैं हवलदार बहादुर उर्फ कानून हूं। कानून का रास्ता रोकने का अंजाम जानता है?
CASH
CASH




अबे ओ कानून के बच्चे, पीछे आ।
कौन है बे? कानून की गुद्दी पकड़ने की किसने हिम्मत की? हवालात में डालकर सड़ा दूंगा साले को!










मजबूरी थी। हवलदार बहादुर को लाइन में लगना पड़ा।










नौ अजूबों का नाम सुनकर सभी जड़ होकर रह गये थे।






जबकि बाकी लोग हवलदार के पीछे पड़े हुए थे।

कैसे पुलिस वाले हो जी तुम, बैंक लुट रहा है और तुम बेवकूफों की तरह खड़े हो।






लोगों की धमकी ने तुरन्त असर किया था हवलदार बहादुर पर।

चढ़ जा बेटा हवलदार बहादुर सूली पर, वरना ये साले तुझे सस्पेन्ड कराकर ही छोड़ेंगे।













...और जा गिरे सीधे पहलवान के ऊपर।
चड़ाम
आई...ई...ई...!


जल्दी ही-
हैं! पहलवान मुच्छाड़िया पर अटैक!
हाय रे! मेरी कमर।
आंय! फूट गई मेरी टांट!


ले चख इसका मजा!
ओह! मार डाला रे।
ठाक
इस बार हवलदार बहादुर ने लैण्ड किया सीधा हबीब टकले के सिर पर।
भड़ाक
हाय! मैं किसकी टांट को रोऊं रे!


इस साले पर इतना खुजली वाला पाउडर फेकूंगा कि सारी जिंदगी खुजाता रहेगा।
साले, मेरी टांट फोड़ डाली तुम लोगों ने। हवालात में सड़ा दूंगा तुझे।
झाड़िया ने खुजली का पाउडर निकालने के लिए जेब में हाथ डाला...


...मगर उससे पहले ही-
धड़ाक
तू मुझ पर अपनी खुजली वाला पाउडर नहीं फेंक पायेगा साले।
आई...ई...ई...!


तभी-
मगर मेरी किक तुझे बेहाल करके छोड़ेगी।
हाय! मर गया रे!


अबे कसाइयो, क्यों मार रहे हो मुझे! हाय!
एक मेज को तोड़ते हुए धराशायी हो गये हवलदार बहादुर।
कड़ाक


फिर उनके सम्भलने से पहले ही-
माकडू की सांसों की बदबू नहीं सह पायेगा तू!
हाय! मार डाला रे! क्या भयंकर बदबू है!
माकडू की सांसों की बदबू हवलदार के होश उड़ाने वाली ही थी...


... कि तभी हवलदार के हाथ पड़ गया एक पेपर वेट...


...और-
पीछे हट साले!


गप


तड़प उठा माकडू -
आह!

तभी बाकी अजूबों ने मिलकर दबोच लिया हवलदार बहादुर को—

छोड़ दो सालो, वरना सबको हवालात में बन्द करके सड़ा दूंगा।

तुझे छोड़ेंगे तो जरूर, मगर ऐसा सबक सिखाकर कि तू किसी को मुंह दिखाने के काबिल न रहे।

और इस काम को मैं अन्जाम दूंगा भाइयो!

दूसरे ही क्षण बिजली की-सी तेजी से चलते हबीब टकले के उस्तरे ने...

छोड़ो न मेरी जुल्फें, सब लोग क्या कहेंगे...

...हवलदार बहादुर के सिर के बालों के साथ-साथ...

... उनकी मूंछें भी साफ कर डालीं।

नहींऽऽ

फिर—

अब दफा हो जा यहां से!


धड़ाक
आय! इस बंदे से पंगा लिया जाए।


और यह भारत के युवा फुटबाल खिलाड़ी गर्दभराज की शानदार किक!
धाड़
तड़ाक
अबे, ये तूने किस जन्म की दुश्मनी निकाली है।


इधर बैंक का सब माल और सारे आदमियों के बाल समेट चुके थे नौ अजूबे।
काम हो गया, चलो!


सभी बाहर निकले और अपनी अजूबा गाड़ी पर बैठ कर भाग निकले।
जूमSSS


इधर हवलदार बहादुर।
बुहू... बुहू! सालों ने मुझे भी टकला बना दिया। अब चम्पाकली को क्या मुंह दिखाऊंगा।


रोते-कलपते वह अपने घर पहुंचे-
चम्पाकली और दुण्ड कहां जा मरे?


इधर चम्पाकली और दुण्ड-
फूफी, उस टकलू की हिम्मत देखी तैंने! सालो कितने धड़ल्ले से म्हारे घर में घुस गया।
चिन्ता मत कर दुण्ड, अगर मैंने भी उस चोर की टांट पर तबला न बजा दिया तो मेरा नाम भी चम्पाकली नहीं।


आ मेरे साथ।
चल फूफी, आज घने दिनों बाद अपनी वर्जिश का कमाल दिखाने का मौका मिलेगा।


दोनों चुपके से अन्दर घुसे और हवलदार बहादुर पर टूट पड़े।
अरे!
फूफी, पकड़ लिया चोर को मैंने। अब शुरू हो जा तू।


चम्पाकली भी अपनी सैंडल उतारकर पिल पड़ी हवलदार बहादुर पर।
तड़ाक
ये ले!
गं... गूं...
और ले!
तड़ तड़ तड़
बोल, फिर आयेगा मेरे घर में?
फूफी का भी जवाब नहीं, क्या मारा है टकलू को।
गंजी टांट पर पड़ते सैंडिलों की बारिश ने...


... तिलमिला कर रख दिया हवलदार बहादुर को। और परिणामस्वरूप...
अरे, काट डाला!
कच
पीड़ा से बिलबिला उठा दुण्ड...


...और उसने हवलदार बहादुर को दूर फेंक दिया।
दुण्ड को काटा! ना छोडूंगा मैं तैंने।
आई... ई... ई...!
अभी वह उठ भी नहीं पाये थे...
... कि शेरनी की तरह झपटी चम्पाकली उन पर।
मेरे भतीजे को काटा, छोड़ूंगी नहीं तुझे शैतान!
रुक जा चम्पाकली, ये मैं हूं।
हवलदार की चीख ने...


...जड़ कर दिया चम्पाकली को –
आंय! तुम यह सर क्यों मुंडा आए!
अरे! यो तो अपना फूफा है। यो भी रोज-रोज-ये इसे करता रहवे है।


अरी भागवान! पहले मुझे उठा, फिर बताऊंगा कि मेरा यह हाल कैसे हुआ?


हवलदार बहादुर से सारी बात सुनकर –
ओह! तो नौ अजूबों ने तुम्हारी यह हालत की है।
हां! और अब मैं भी उनकी ऐसी हालत करूंगा कि वे सात दुनी चौदह जन्मों तक मुझे याद करके रोयेंगे।


खैर, छोड़ो उस बात को और ये बताओ कि तुम बैंक से रुपये लाये या नहीं।
रुपये! हां, वह तो ले आया हूं मैं।
हवलदार ने रुपये निकाल कर चम्पाकली को दे दिये।


रुपये हाथ में आते ही –
अब तुम फटाफट तैयार हो जाओ। तुम्हें मेरे साथ जौहरी बाजार चलना होगा।
तेरा दिमाग तो खराब नहीं हो गया है। इस हालत में मैं जौहरी बाजार जाऊंगा।


हवलदार के तेज बोलते ही चम्पाकली की भवें तन गई।
मुझसे तेज आवाज में बात।
ओय! इस रणचण्डी का क्रोध तो फिर भड़क उठा, अब ये फिर मुझ पर कहर बन कर बरसेगी।
लेकिन इससे पहले कि चम्पाकली का कहर हवलदार पर बरस पाता...


...बीच में आ गया दुण्ड।
!!!
छोड़ो फूफी, इस समय फूफा जी की सेवा करने से ज्यादा जरूरी है खरीदारी करना।
तुम ठीक कह रहे हो दुण्ड। आओ चलें।


और तुम कान खोलकर सुन लो, अगर मेरे पीछे घर से बाहर निकले तो देखना मैं तुम्हारा क्या हाल करती हूं।
ठ...ठीक है।


चम्पाकली और दुण्ड के जाने के बाद-
सारी मुसीबत उन नौ अजूबों के कारण हुई है। काश! जिन्न दीवार पार करने की बजाये कोई अच्छी-सी शक्ति देकर जाता तो मजा चखा देता उन अजूबों को।


काश! एक बार वह जिन्न सामने आ जाये तो जेल में डालकर सड़ा डालूं साले को।


तभी-
आंय!


तुमने पुकारा और अपुन चला आया।
उई...ई...ई...! तुम!


क्यों, अपुन को कैसे याद किया आदमी?
अगर इसे सच्ची बात बता दी तो मेरा मार-मारकर भुर्ता बना देगा।
व...वो... मैं सोच रहा था कि अगर तुम मिल जाओ तो तुम्हें जी भरकर प्यार करूँ।


अपुन सब जानता है। तू अपुन को जेल में डालकर सड़ाने की बात सोच रहा था। क्यों, अपुन ठीक बोला ना?
हे भगवान्! इसे असली बात पता चल गई है। अब यह मुझे फिर पटक-पटक कर मारेगा।
वो...वो... मैं...मैं...


बकरी की तरह मिमियाना छोड़ो। अपुन ने तुम्हारी गलती को माफ कर दिया है। अब यह बताओ, क्या समस्या है तुम्हारे को।


समस्या बड़ी गम्भीर है जिन्न भाई, सुनो...!
फिर हवलदार बहादुर ने जिन्न को सारी बात बता दी...


...और बोला-
मेरा यह हाल देख रहे हो। ये साले उन्हीं नौ अजूबों की करामात हैं।


अबे ओ आदमी, आखिर रहे न मूर्ख के मूर्ख। अपुन ने तेरे को जो शक्ति दी थी, अगर तुम उसका सही उपयोग करते तो वे नौ अजूबे आठों खाने चित हो जाते...

...खैर, छोड़ो इस बात को। अपुन तुम्हें बताएगा कि उन नौ अजूबों की शक्तियों पर कैसे झाड़ू फेरनी है।

सच जिन्न भाई? तो बताओन फटाफट।

फिर जिन्न हवलदार बहादुर को नौ अजूबों से निपटने की तरकीब बताने लगा।




लेकिन भइये, मैं उन्हें ढूंढूं कैसे? कहां मिलेंगे वे?

ये भी अपुन बताता है तेरे को...




तुम वहां पहुंचकर उन्हें धर दबोचो।

इतना कह कर जिन्न गायब हो गया।




कुछ ही पलों बाद हवलदार बहादुर अपने घर के कबाड़ खाने में मौजूद थे।
उनसे निपटने की चीजें मुझे यहां मिल जायेंगी।


फिर अपनी जरूरत का सामान इकट्ठा करने के बाद-
हा... हा... हा...! मैं इंडियाना जोन्स बांडु आज काफी दिन बाद फार्म में आया हूं। अब खैर नहीं उन नौ अजूबों की।


इधर जौहरी बाजार में नौ अजूबे अपना धावा बोल चुके थे।
भाइयो, हमें नौ अजूबे कहते हैं। हमने इस शहर में बड़ों-बड़ों की खाट खड़ी और बिस्तर गोल कर दिया है।
अब अगर तुम अपनी ऐसी-तैसी नहीं करवाना चाहते तो चुपचाप यहीं बैठे रहना।
उस समय तक जब तक कि हम तुम्हारी दुकान में झाडू फेरकर ना चले जायें।



वैसे झाड़िया का हथियार तुम्हें कुछ करने लायक ही नहीं छोड़ेगा।
झाड़िया के हाथ से हवा में उड़ा खुजली का पाउडर...

...और भगवान को याद करने लगे ज्वैलरी शॉप में मौजूद सभी ग्राहक।

हाय! कोई मेरी पीठ खुजाओ रे!

हे भगवान्! ये खुजली तो मेरी जान लेकर रहेगी।

मैं खुजली से परेशान इन लोगों को गंजा करता हूं। तुम सब अपना काम करो।

नौ अजूबे अपना-अपना काम करने में जुट गये।

छनाक

आज हम पूरा बाजार लूट कर ले जाएंगे।

आज लाइन लगाकर गंजा करूंगा तुम सबको।

तालातोड़ू के लिए कोई भी ताला तोड़ना बच्चों का खेल है। ooo

कड़ाक

अभी नौ अजूबे अपने कामों में ही व्यस्त थे कि वहां...

...आ पहुंचा!

हवलदार बहादुर!

हां बेटे नचकइये, आज देखूंगा कितना नाचता है तू?


तुरन्त ही नचकइया ने कर दिया अपना स्टीरियो चालू।
वाह! चाहे कोई मुझे जंगली कहे...!
अपना स्टीरियो चालू कर दिया इसने। अब मुझे भी अपना काम चालू कर देना चाहिए।


बेहद फुर्ती से हवलदार बहादुर का हाथ अपनी जेब में रेंगा...
...और जेब से ढेर सारे कंचे निकाल कर फर्श पर उछाल दिये।


कंचों पर नचकइया का पांव पड़ा...
...और हो गई "ध" से धड़ाम।
धड़ाम
भड़ाक
फिस्सस


अब तेरा स्टीरियो टूट चुका है बेटे। और मैं जानता हूँ बिना म्यूजिक के तू न नाच सकता है और न ही किसी पर वार कर सकता है।
आह!


ले, अब चख मेरे भीमसेनी लट्ठ का स्वाद!
आई...ई...ई...
तड़ाक
डण्डे के एक ही भरपूर वार से नचकइया चीखता हुआ ढेर हो गया।


अपने साथी का हाल देख हवलदार बहादुर की तरफ पलटे हबीब टकला और हड्डीतोड़।
नचकइया की मामा तेरी अब हड्डीतोड़ के वार से नहीं बचेगा तू।
तुझे टकला तो पहले ही कर दिया था मैंने। अब तेरी खाल उतारूंगा अपने उस्तरे से।


आओ सालो, तुमसे निपटने की पूरी तैयारी करके आया हूं मैं।


और वह तैयारी है ये। एम.डी.एच.का शुद्ध लाल मिर्च पाउडर!
आई...ई...ई...
अबे फोड़ डाला मेरी आंखों को। आई...ई...ई...

अब चखा तुमने मिर्चों का स्वाद! और अब चखो...
...मेरे लात-घूंसों का स्वाद!
तड़ाक
आह!


आई...ई...ई...!
आई...ई...ई...!
तभी-
बस, बहुत हो चुका बच्चो!
आह!
धाड़


साले, तुझ पर इतनी भयंकर बदबू फेंकूंगा कि तू तड़प-तड़प कर मर जायेगा।
ये मुझ पर बदबू फेंकने जा रहा है, अब अपनी शक्ति प्रयोग करने का समय है।
अभी साकड़ू अपनी बदबू फेंक भी नहीं पाया था कि...
... हवलदार बहादुर गोली की सी रफ्तार से दीवार में जा घुसे।
आंय!
!!!


यह साला दीवार में कैसे घुस गया?
हैरत में डूबा वह वापस पलटा।
लगता है, मेरा दिमाग फिर गया है। भला कोई आदमी दीवार में कैसे घुस सकता है?
तभी हवलदार दीवार से बाहर निकले।
ही...ही...ही...! अब आयेगा मजा।


और बला की फुर्ती से अपने हाथ में थमी जुराब साकड़ू की नाक पर रख दी।
बेटा साकड़ू, तू दुनिया को अपनी सांसों की बदबू से बेहोश करता है, अब जरा मेरी इस तीन महीने पुरानी जुराब की बदबू सहन करके दिखा।


काकडू उस पुरानी जुराब की बदबू
सहन नहीं कर पाया और बेहोश हो गया।
हा... हा... हा...! बेहोश हो गया बेचारा।


फिर वह पेंटल की ओर पलटे।
वहाँ खड़ा है साला? अभी मजा चखवाता हूँ।


कुछ क्षण बाद -
क्या हाल है भाई?
हूँ हूँ... हूँ... हूँ...!


अरे ठहर जा, भागता कहाँ है?
छ... छोड़ दे!


लेकिन हवलदार फिर दीवार में समा गए।
हाय! मार डाला जालिम।
धाड़
और पेंटल के सिर पर सजो हटसबम गिरा, जो उसे बेहोश कर गया।


उसे बेहोश करके बड़ी शान से दीवार से बाहर निकले हवलदार बहादुर।
हा... हा... हा...! जेम्स बांड से पंगा लेने चले थे।

अपनी सफलता पर अकड़ते हुए वह झाड़िया के पीछे पहुंचे
ओय छछूंदर!
क... कौन है बे!

अबे, हम हैं हवलदार बहादुर उर्फ इण्डियन जेम्सबॉंड!
अबे जेम्सबाड के बच्चे, यह मूंछें मरोड़ना छोड़ और खुजाने की तैयारी कर।

कह कर झाड़िया ने ढेर सारा पाउडर हवलदार की ओर उछाल दिया।
ले खुजा साले!

लेकिन इससे पहले कि पाउडर हवलदार बहादुर के शरीर पर गिरता, वह अपने ओवर कोट की जेब से एक पंखा निकाल कर तेजी से उसे झलने लगे।
अबे, पंखा मत हिला, हाथ हिला खुजाने के...

लेकिन झाड़िया की बात अधूरी रह गई क्योंकि पंखे की हवा से पाउडर उड़कर उसी पर जा पड़ा था।
आऽऽऽ खुजली!

कुछ ही पलों में झाड़िया पागलों की भांति अपने जिस्म को नोच रहा था।
हाय! खुजली!
आह! खुजली!
हा... हा... हा...! जेम्सबांड से टकराने का यही अंजाम होता है।


तभी अचानक आ चिपका चिपकू।
जेबकतरे की औलाद, चिपकू की पकड़ से अब नहीं छूटेगा तू!
उफ़! बुरी तरह जकड़ लिया इसने तो मुझे।


छोड़ दे साले! वरना हवालात में बन्द करके सड़ा दूंगा तुझे!
हवलदार बहादुर बुरी तरह चीख उठे थे।


तभी उनके पीछे हाथ में गमला लिए, प्रकट हुआ रपटुआ।
ये गमला इसका बन्टाधार करके ही छोड़ेगा।


जैसे ही रपटुआ ने हवलदार बहादुर के सिर पर गमला मारना चाहा, वे तेजी से घूमे और गमला चिपकू की कनपटी पर लगा –
धाड़
आह!


जिसने चिपकू को धरती सूंघा दी।


अपने साथियों का हाल देख अब खड़े रहने की हिम्मत न बची थी रपटुआ और तालातोड़ू में।
सबका बन्टाधार हो गया। अब भाग लो गुरु।
ठीक कह रहे हो।


अगले ही क्षण रपटुआ ने दुकान से बाहर निकलकर सड़क पर फैलाया था अपना चिपचिपा पदार्थ और –
अरे, ये दोनों तो तेजी से रपटते हुए जा रहे हैं!


कोई बात नहीं, इनका इन्तजाम भी है मेरे पास।


और फिर–


तालातोड़ के गले में गिरा फन्दा और वह जा गिरा जमीन पर।
आह! मर गया।
धड़ाम


लेकिन रपटुआ तेजी से रपटता पहुंच गया था, अपनी अजूबा गाड़ी तक।
ओह! वह तो निकल जायेगा। लेकिन अब मैं उसे रोकूं कैसे?


अगले पल–
ये गटर उस गाड़ी के सामने वाले गटर में जाकर निकलेगा। अब उसे रोकने के लिए इस गटर में घुसना होगा मुझे।


और गटर में घुसने के लिए मेरी शक्ति काम आयेगी।


नीचे-
उस साले के लिए गन्दे गटर में घुसना पड़ा है। मैं छोडूंगा नहीं उसे।


ऊपर-
मैं अपनी गाड़ी तक पहुंच गया। अब मुझे कोई नहीं पकड़ सकता।


बेहद तेजी से गाड़ी में बैठा रपटुआ। लेकिन गाड़ी स्टार्ट कर पाता उससे पहले ही-
हैं! हवलदार बहादुर!


...फिर उसने गाड़ी स्टार्ट करके आगे बढ़ा दी।
कुचल डालूंगा साले को।
अपनी तरफ गाड़ी बढ़ते देख होश फाख्ता हो गये हवलदार बहादुर के।


एक क्षण के लिए उछल गया रपटुआ...
वह गटर का ढक्कन ऊपर उछालकर एक तरफ भागे...
भाग कर बचूं मैं तो।
...और एक दीवार में समा गए।


इधर गटर के ढक्कन से बचने के लिए रपटुआ ने जैसे ही स्टेयरिंग घुमाया, उसका संतुलन बिगड़ गया...

...और –
भड़ाक
आह!
नौ अजूबों का आखिरी अजूबा भी अब ढेर हो चुका था।
हे... हे... हे...! बड़े आये थे हवलदार बहादुर की ग्रेट से टकराने।
तभी वहां पुलिस आ पहुंची, जिसे लोगों ने फोन करके वहां बुलाया था।
वाह हवलदार, वाह! तुमने नौ अजूबों को धराशायी करके यह साबित कर दिया है कि तुम नाम के ही नहीं, काम के भी बहादुर हो। हम तुम्हारे लिए तगड़े इनाम की सिफारिश करेंगे।
धन्यवाद सर!
POLICE
लेकिन तुमने ये सब किया कैसे?
ये एक ऐसा भयंकर राज है इंस्पेक्टर साहब, जिसे जान लोगे तो सिर पर उगा आये दो-चार बाल भी फिर से उड़ जायेंगे...
!!!
इसलिए ये राज राज ही रहे तो अच्छा है।
अब चलकर यह खबर चम्पाकली को सुनाऊं। बहुत खुश होगी वह यह सुनकर।


तभी-
जिन्न!


जिन्न पूरी तरह प्रकट हुआ-
क्यों रे आदमी, अपुन की तरकीब और शक्ति काम कर गई ना?
बिल्कुल जिन्न भाई! सचमुच तेरी शक्ति कमाल की है।


अब तुम्हारे फायदे के लिए मैं तुमसे पुराना कुछ ले रहा हूं और बदले में नया कुछ दे रहा हूं।


ओह! पुराना कुछ ले रहे हो और नया कुछ दे रहे हो, मगर क्या?
ये मैं नहीं बताऊंगा। तुम्हें अपने आप ही पता चल जायेगा। ही... ही... ही!


और हवलदार कुछ कह पाता उससे पहले ही-
अरे!
और फिर जिन्न वहां से गायब हो गया।


लेकिन ये पुराना क्या ले गया और नया क्या दे गया।
लेकिन लाख सिर पटकने के बाद भी समझ न पाये हवलदार बहादुर।

साला वह जिन्न भी खडूस दिमाग का है। हर काम पहेलियों में करता है। खैर, अबतो घर पहुंचूं। देर-सवेर मुझे उसकी पहेली का मतलब पता चल ही जायेगा।



...कि घर पर एक नया हंगामा उनका इंतजार कर रहा था –

सच कह रहा है तू?

एक दम सोलह आने फूफी, मुझे कर्नल धुरंधर सिंह ने खुद बताया कि फूफा जी रात उनकी पत्नी के बेडरूम में घुस गये थे।







लेकिन घर की तरफ बढ़ते हवलदार बहादुर यह नहीं जानते थे...

जब हवलदार बहादुर घर पहुंचे तो उन्हें देखते ही उस पर बरस पड़ी चम्पाकली–
























प्रिय पाठको!

हवलदार बहादुर को दी गई जिन्न की नई शक्ति क्या होगी और वह क्या-क्या गुल खिलायेगी, ये तो अभी हम भी नहीं जानते। इसके लिए हमारी तरह आपको भी हवलदार बहादुर का आगामी प्रकाशित अंक देखना होगा, जिसका नाम है–

हवलदार बहादुर और

# साठ लाख का बकरा